AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
ISSN: 3048-7951
Volume-1, Issue-2, August-October 2024

राष्ट्रीय आंदोलन, सांप्रदायिकता और मौलाना आजाद का भारत (1920—1947)

डॉ0 पप्पु ठाकुर

पूर्व शोध छात्र इतिहास विभाग

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

मौलाना आजाद (1888—1958) राष्ट्रीय विरासत है। इतिहास में उन्हे पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ योद्धा, सांप्रदायिक सद्भाव के मुख्य निर्माता और एक ऐसे कांग्रेस प्रमुख के रूप में जाना जाता है जो 1947 में देश के विभाजन के खिलाफ चट्टान की तरह खड़े हो गए थे। इस अध्याय में स्वतंत्रता संग्राम में मौलाना आजाद की भूमिका, अल्पसंख्यकों की समस्याओं को समझने में उनके योगदान और अंत में धर्म—निरपेक्ष भारत के उनके विचार के बारे में चर्चा की गई है।

स्वदेशी आंदोलन (1905—1908) के दौरान जिस समय लॉर्ड कर्जन ने बंगाल के विभाजन की घोषणा की उस समय वह कट्टर उग्रवादी श्यामसुदर चक्रवर्ती और अरविंद घोष के साथ संपर्क में थे क्रांतिकारियों से जुड़कर उन्होने लोगो के मन से यह बात निकाल दी कि मुस्लिम स्वदेशी आंदोलन के विरूद्ध है। भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए उन्होने उत्तरी भारत के कुछ शहरों में गुप्त समितियाँ बनाई। वह फिरंगियों के खिलाफ लड़ाई में हिंसक तरीको के प्रयोग से नही हिचकिचाते थे।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान आजाद विद्रोही गतिविधियों में शामिल थे। अल—हिलाल और अल—बलघ के जरिए उन्होने सर्व—इस्लामी और ब्रिटिश विरोधी प्रचाार किया। शुरू में वह मुस्लिम लीग के आलोचक थे, लेकिन उन्होने 1914 के लीग के संकल्प का समर्थन किया जिसमें उपयुक्त स्व—शासन की बात की गई थी। उन्होने अनेक युवाओं को क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होने "जिहाद" को अन्याय के खिलाफ लड़ाई बताया। वे 1915 में छिपकर अफगानिस्तान चले गए, अबदुल्लाह के संपर्क में थे और भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों को तेज करने के लिए शुरूआती तैयारियाँ कर रहे थे। कलकत्ता में मुस्लिम समुदाय में अपने प्रभाव के बल पर उन्होने षड्यंत्रकारियों को

वित्तीय सहायता दी। जाहिर है कि उन्हे अल–बलघ में छपे किसी आपत्तिजनक लेख के लिए नही, बल्कि सिल्क षड्यंत्र में भागीदारी और उसके कुछ नेताओं के साथ उनके निकट संबंधो के कारण बंगाल से निष्कासित किया गया। उन्हें इस शर्त पर राँची देनी पड़ती थी और आगंतुकों के बारे में बताना पड़ता था।

1920 तक उन्होने लीग या कांग्रेस के साथ जुड़ने के बारे में कोई निश्चय नही किया था, हालांकि ब्रिटिश शासन के प्रति उनका विरोध जगजाहिर था। गाँधीजी उनके पिता के बारे में जानते थे जिन्होनें दक्षिण अफ्रिका में नसल भेदभाव के खिलाफ आंदोलन में समर्थन दिया था। वास्तव में गाँधीजी राँची में ही आजाद से मिलना चाहते थे, लेकिन सरकार ने इसकी अनुमति नहीं दी।

919 के बाद स्वतंत्रता संघर्ष ने नया रूप ले लिया। रॉलेट–विरोधी आंदोलन, सत्याग्रह आंदोलन, जलियावाला बाग हत्याकांड, मार्शल ला और इसमें की गई ज्यादतियों ने देश में जागृति पैदा कर दी थी। उस समय कांग्रेस में नरमपंथियों की आवाज दब गई थी और वे सेना विहीन अफसर नजर आ रहे थे। साथ ही उस समय हिंदू–मुस्लिम एकता अपने चरम पर थी और वे एक ही ग्लास में पानी पीते थे। औपनिवेशिक प्राधिकारी इस एकता से परेशान थे। लोगो और सरकार के बीच विरोध के कारण खुलकर संघर्ष हुए। जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद बैगोर ने अपनी नाईट की उपाधि को वापस कर दिया, गाँधी ने कैसर–इ–हिंद स्वर्ण पदक लौटा दिया। तुर्की साम्राज्य के ध्वस्त हो जाने के बाद भारत में मुस्लिमों में असंतोष था। आजाद तुर्की और उसके घटे हुए कद के कारण बहुत चिंतित थे। उनके अखबार अल–हिलाल पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। वह खिलाफत आंदोलन की तरफ आकर्षित हुए और उसमें कूद पड़े।

खिलाफत आंदोलन के उदय के साथ उन्हे अपने विचारों के लिए संस्थागत समर्थन मिला। असहयोग आंदोलन के दौरान उम्मत–ए–वहीदा (एक राष्ट्र) का गठन करके उन्होनें हिंदुओं और मुस्लिमों को एक करना शुरू कर दिया। इसके बाद वह बहुत बड़े आंदोलनकारी और राष्ट्रवादी लक्ष्य के कट्टर समर्थक बन गए। ध्यान देने की बात है कि गाँधीजी ने शुरू से ही खिलाफत के लिए अपनी सहानुभूति व्यक्त कर दी थी। 18 जनवरी 1920 को आजाद खिलाफत सम्मेलन में भाग लेने के लिए दिल्ली आए और गाँधीजी से मिले। तिलक और अन्य कांग्रेस नेता भी मौजूद थे। आजाद ने वाइसरॉय चेम्सफोर्ड को भेजी जाने वाली प्रतिनिधियों की याचिका पर हस्ताक्षर किए। अपनी याचिका में प्रतिनिधियों ने खलीफा की संप्रभुता की माँग की। 1920 के शुरू में खिलाफत आंदोलन ने गति

पकड़ ली। खिलाफत नेताओं, मुहम्मद अली, अब्दुल बारी और आजाद ने देश का दौरा किया, बैठको को संबोधित किया, पैसा इकट्ठा किया और अपनी लड़ाई में हिंदुओं के समर्थन के महत्व पर बल दिया। आजाद ने खिलाफत की रक्षा और पवित्र स्थानों को गैर–मुस्लिमों के हाथों में पड़ने से बचाने के मुस्लिमों के कर्तव्य पर आजाद ने खिलाफत की रक्षा और पवित्र स्थानों को गैर–मुस्लिमों के हाथों में पड़ने से बचाने के मुस्लिमों के कर्तव्य पर बल दिया। मार्च 1920 में गाँधीजी के अलावा 15 मुस्लिमों और दस हिंदुओ ने दिल्ली में असहयोग योजना पर चर्चा की।

इस अवसर पर गाँधीजी, बाल गंगाधर तिलक, मदनमोहन मालवीय, लाजपतराय, डॉ0 अंसारी, अजमल खान, मौलाना आजाद, अब्दुल बारी और शौकत अली मौजुद थे। तिलक ने गाँधी के असहयोग का समर्थन नही किया, मालवीय ने कुछ आपत्तियां जताई, लाजपत राय ने आंदोलन के केवल स्वदेशी अंश का समर्थन किया, लेकिन जिन्नाह इसके खिलाफ था, वह राजनीति में धर्म का प्रयोग नही चाहता था। गाँधीजी ने चेतावनी दी कि यदि तुर्की शांति की शर्ते संतोषजनक नही हुई तो असहयोग को क्रियान्वित किया जाएगा। मौलाना आजाद ने गाँधीजी के समर्थन किया और कहा कि अपने बिहार दौरे से वह इस बारे में आश्वस्त है कि मुस्लिम असहयोग में पुरे उत्साह के साथ हिस्सा लेंगे। हालांकि गाँधीजी ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ, संघर्ष में गैर–मुस्लिमों को नाराज न करते हुए असहयोग आंदोलन में मुस्लिमों की भावनाओं का प्रयोग किया लेकिन उनके किसी भी कार्यक्रम में खिलाफत का मुद्दा नही था। वास्तव में असहयोग आंदोलन ने पूरे देश को झकझोर दिया। लोगो के मन में आजादी के लिए हिलोरें उठने लगी। जमायत–उल–उलेमा ने भी फतवा जारी करके लोगो से चुनावों सरकारी स्कूलों, कॉलेजो और अदालतो का बहिष्कार करने और पदवियों और ओहदों का त्याग करने को कहा। उस समय व्याप्त जोश को जवाहरलाल नेहरू ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया:

दुख की बात है कि 1920 और 1930 के दशकों के दौरान राष्ट्रीय नेता सांप्रदायिक समस्या का समाधान नही कर सके। नेहरू रिपोर्ट (1928), जिन्नाह के चौदह सुत्र (मार्च 1929) सर्व दल सम्मेलन (दिसंबर 1929) साइमन आयोग प्रस्ताव (1930) और तीन गोलमेज सम्मेलन (नंवबर 1930 से जनवरी 1932) सांप्रदायिकता की समस्या का सामाधान नही कर सकते जो गाँधीजी के शब्दो में समस्याओं की समस्या बन गई थी। बुनियादी सवाल प्रांतीय और केंद्रीय स्तरो पर जाने वाली नई सवैधानिक व्यवस्थाओं में अल्पसंख्यको के रूप में मुस्लिमों के प्रतिनिधित्व का

ISSN: 3048-7951
Volume-1, Issue-2, August-October 2024

था। अधिकांश इतिहासकार भारत के विभाजन का कारण कांग्रेस–लीग अंतरिम सरकार प्रयोद की विफलता और 1946 में सांप्रदायिक दंगो या 1940 के पाकिस्तान प्रस्ताव को मानते है जिसमें अलग मुस्लिम देश की मांग की गई। 1937 में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस–लीग गठबंधन सरकार के न बन पाने को भी कांग्रेस और लीग में फूट का कारण माना जाता है जिससे पाकिस्तान के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। लेकिन बीस के दशक के अंत और तीस के दशक के प्रारंभ की महत्वपूर्ण अवधि की उपेक्षा कर दी जाती है, जब वास्तव में विभाजन के बीज बोए गए। दलों के बीच एकता के लिए इस अवधि में आजाद द्वारा किए गए प्रयास उल्लेखनीय है।

आजाद अपने शंत स्वभाव और राजनीतिक संकट की स्थिति में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए विख्यात थे, इसलिए 1940 के रामगढ़ सत्र में उनसे कांग्रेस का अध्यक्ष पद संभालने के लिए कहा गया। यह संयोग मात्र नही था कि वह 17 मार्च 1940 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए और मुस्लिम लीग ने 23 मार्च 1940 को अलग देश पाकिस्तान के लिए संकल्प पारित किया। उन्होंने शुद्ध उर्दू में भाषण दिया जिसका पंडित ने अंग्रेजी में अनुवाद किया। अपने जोरदार भाषण में उन्होंने प्रमुख राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय मुद्दों को उठाया। कांग्रेस के साथ विचार किए बगैर ब्रिटेन द्वारा युद्ध की घोषणा की बात भी की गई। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आलोचना करते हुए उन्होने कहा कि भारत उसकी विजय नही चाहता जिससे वह और मजबुत बन और भारत की दासता की अवधि बढ़े। उन्होने सांप्रदायिकता की समस्या पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होने इस कटु सत्य को स्वीकार करते हुए अंग्रेजो के घृणित मंसेबों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया उन्होंने कहा कि हिन्दुओं और मुसलमानों के धर्म जरूर अलग है, परंतु राष्ट्र के रूप में वे एक है। वे सांझी विरासत के अभिन्न अंग है। एक भारतीय और सच्चा मुसलमान होने और इस्लाम और भारत की साँझी विरासत को अपनाने में कोई अंतर्विरोध नही है। हिंदू–मुस्लिम समस्या पर उन्होंने यह कहा:

"पुरी ग्यारह सदिया बीत चुकी है। अब भारत की धरती पर इस्लाम का उतना ही हक है जितना कि हिंदूवाद का। यदि हिंदूवाद कई हजार वर्षो से लोगो का धर्म है तो इस्लाम भी एक हजार वर्ष से उनका धर्म है। जैसे कोई हिंदू गर्व के साथ कह सकता है कि वह हिंदू और भारतीय है, वैसे ही हम उतने ही गर्व के साथ कह सकते है कि हम भारतीय है और इस्लाम के अनुयायी है।"

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
ISSN: 3048-7951
Volume-1, Issue-2, August-October 2024

उन्होंने मुसलमानों के मन में बैठे डर को दूर किया और उन्हें भरोसा दिलाया कि उनके हितों की रक्षा होगी। उन्होंने कांग्रेस के पुरे इतिहास में उसकी नीति का मार्गदर्शन किया औ कहा कि भारत में जो भी संविधान स्वीकार किया जाएगा उसमें अल्पसंख्यकों के अधिकारों और हितों की गारंटी होगी वह नही चाहते थे कि बहुसंख्यक अल्पसंख्यको के हितों के बारे में निर्णय न करें, लेकिन चाहते थे कि अल्पसंख्यकों के हित उनकी सहमति से तय हो।

मौलाना आजाद सामासिक संस्कृति के गुणों के कायल थे और समृद्ध विरासत और साँझी संस्कृति की उपेक्षा करके केवल अपने संकीर्ण अतीत को फिर से उभारने की हिंदू और मुस्लिम प्रवृति की निंदा करते थे। आजाद केवल रणनीति के केवल अपने संकीर्ण अतीत को फिर से उभारने की हिंदू और मुस्लिम प्रवृति निंदा करते थे। आजाद केवल रणनीति के रूप में ही अहिंसा में विश्वास करते थे, मान्यता के रूप में नही । उन्होंने मुक्ति के लिए सशस्त्र बल के प्रयोग को भी उचित माना। दुसरे विश्व युद्ध में उनकी अलाएड के साथ सहानुभूमि थी जो नाजीवाद और फासीवाद के खिलाफ लड़ रहे थे। लेकिन फजलुल हक ने आजाद के अध्यक्षीय भाषण को अइस्लामिक बताया और कहा कि पंजाब और बंगाल में भी उनकी स्थिति खराब है। दुसरी आरे हिंदू महासभा का रूख भी उतना ही मुस्लिम विरोधी था। वे चाहते थे कि न केवल कांग्रेस का हिंदू महासभा में विलय कर दिया जाए, बल्कि हिंदू राज की स्थापना की जाए।

चर्खा हिंदू–मुसलमान एकता, प्रेम और अहिंसा जैसे कांग्रेस के आदर्शो को अस्वीकार करके हिंदू राज की स्थापना की जाए। चर्ख, हिंदू–मुसलमान एकता, प्रेम और अहिंसा जैसे कांग्रेस के आदर्शो को अस्वीकार करके हिंदू महासभा अपनी हिंदू नागरिक राम सेना बनाना चाहती थी। वे सेना में मुसलमानों की भर्ती को कम करना चाहते थे। 23 मार्च 1940 को वी.डी. सावरकर ने तामिलनाडु में हिंदू महासभा को संबोधित किया जिसमें उन्होने कहा कि भारत में स्वराज केवल हिंदू राज होगा। एक अन्य भाषण में उन्होने हिंदूओ को राष्ट्र घोषित किया। अंग्रेजों से बातचीत के लिए कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय सरकार, जिसके लिए आजाद का समर्थन था, के बारे जिन्नाह ने बड़ी कठोर टिप्पणी की। उसने इसे कांग्रेस द्वारा हिंदू राज स्थापित करने की चाल बताकर इसकी निंदा की, हालांकि आजाद ने जिन्नाह को स्पष्ट कर दिया था कि यह संयुक्त मंत्रिमंडल होगा और किसी एक दल तक सीमित नही रहेगा। जिन्नाह ने आजाद को फटकार लगाई और उन्हें चेतावनी दी कि वह (आजाद) केवल मुस्लिम मुखौटा बन गए है। जिन्नाह ने उनसे यह भी

ISSN: 3048-7951
Volume-1, Issue-2, August-October 2024

कहा कि वह न तो मुसलमानों के प्रतिनिधि है और न हिंदुओ के और यह कि कांग्रेस हिंदू संगठन है।

आजाद ने जिन्नाह की इस दलील को ठुकरा दिया कि भारत की समस्याओं के समाधान के लिए 1945 में वावेल के प्रस्ताव के अनुसार कार्यकारी परिषद में केवल मुस्लिम लीग से जुड़े मुसलमान प्रतिनधियों को स्थान मिले। उन्होने इस बात पर बल दिया कि जिन्नाह की बात को स्वीकार करने का मतलब होगा कांग्रेस को सांप्रदायिक संगठन बना देना अझैर वह इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे। वाले लिखा है कि उसकी उपस्थिति में शिमला में आजाद ने जिन्नाह से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया परंतु जिन्नाह ने हाथ आगे नही बढ़ाया। 1940 के दशक के अंत तक आते–आते अंतरित सरकार और संविधान सभा में सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की स्थिति बहुत खराब हो गई, विशेष रूप से देश के विभिन्न हिस्सों में सांप्रदायिक दंगो के बाद। अंतरिम सरकार के गठन के खिलाफ जिन्नाह द्वारा सी कार्यवाही दिवस की घोषणा के तीन दिन के भीतर अकेले कोलकता में 20000 लोगों की जान चली गई या गंभीर रूप से जख्मी हुए। इन नृशंस हत्याओं के बाद देश गृह युद्ध के कगार पर पहुँच गया। मुस्लिम लीग ने कांग्रेस से बचाव के लिए मुल्लाओं और पीरों को बुलाया। तर्क दिया गया कि नेहरू की टिप्पणियां सीधे–सीधे तोड–फोड़ की कार्यवाही थी।

केबिनेट मिशन योजना के बारे में आजाद की प्रतिक्रियाओं का नेहरू ने पुरी तरह से विरोध किया। वास्तव में कांग्रेस ने केबिनेट योजना के बारे में कुछ सफाई देकर स्थिति को संभालने की कोशिश की लेकिन लीग के साथ समझौते के लिए अब बहुत देर हो चुकी थी। इस बारे में तर्क दिया जा सकता है कि अपने अन्य कांग्रेसी सहयोगियों की तरह आजाद भी देश के विभाजन के विरूद्ध थे, क्योंकि उनके विचार से इससे समस्याएं कम नही होंगी बल्कि बढ़ेंगी। उन्होने वावेल को स्पष्ट कर दिया कि सरकार गठन के लिए कांग्रेस मुस्लिम लीग के साथ बराबर को स्वीकार नही करेगी, क्योकि इससे कभी न ख्त्म होने वाले झागड़े शुरू होंगे। विशेष रूप से लाखों लोगो के कत्लेआम को देखते हुए वह चाहते थे कि सरकार पूर्ण स्वतंत्रता की तुरंत घोषणा करे जिसमें वासराय संवैधानिक प्रमुख मात्र हो।

कांग्रेस के कुछ नेताओं के विचार से सांप्रदायिकता की समस्या को राम–रहीम नजरिए से ही सुलझाया जा सकता है जिसने देश के विभाजन का खतरा पैदा कर दिया है: कुछ के विचार से यह आर्थिक मुद्दा थी जिसके लिए दीर्घकालिक कार्यवाही की जरूरत है और कुछ अन्य इसे देश के नेतृत्व के लिए लड़ाई के रूप

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
ISSN: 3048-7951
Volume-1, Issue-2, August-October 2024

में देखते थे। सांप्रदायिक राजनीति के बारे में स्पष्ट समझ रखने वाले आजाद के अनुसार तत्काल आवश्यकता अल्पसंख्यकों के साथ सत्ता सांझा करना थी जिससे कि उनहे हितों की रक्षा की जा सके।

इस बारे में कोई भी चर्चा स्वतंत्रता के बाद आजाद द्वारा 1948 में जमा मस्जिद पर दिए गए विख्यात भाषण के जिक्र के बगैर अधूरी रहेगी। विभाजन के बाद मासूम मुसलमानो को समझ नही आ रहा था कि वे पाकिस्तान जाएं या न जाएं। अपने सशक्त भाषण में आजाद ने कहा कि मुसलमान दो राष्ट्र सिद्धांत को भूल जाएं जो धर्म और विश्वास को सूली पर चढ़ाने जैसा है। उन्होंने इसे भूल जाने को कहा क्योंकि जिन स्तंभो पर वह टिकी है वे बहुत जल्दी धराशायी होने वाले है। उन्होने उनसे पाकिस्तान न जाने के लिए कहा क्योंकि यदि उन्होंने ऐसा किया तो इतिहासकार उन्हे कायर बताएंगे। उन्होने इस बात को फिर दोहराया कि भारत का विभाजन बुनियादी तौर पर गलत है। उन्होंने मुस्लिम लीग को भारतीय मुसलमानों को बरगलाने के लिए दोषी बताया। उन्होनें उनसे कहा कि वे वहम और संशय का मार्ग त्याग दें और विदेशी शासन से देश की मुक्ति का आनंद ले। लाल किले के महतव की याद दिलाते हुए उन्होंने कहा:—

आज भारत आजाद है और आप देख सकते है कि तिरंगा कितनी शान के साथ लाल किले के परकोटे पर लहरा रहा है। यही व झंडा जिसका शासक उसके फहराने से पहले शासक मजाक उड़ाते थे।

उन्होंने कहा कि वे पलायनवादी न बनें और दिल्ली में रहने से न डरें जिसे उन्होनें अपने रक्त से सींचा है। उनको समय के अनुरूप ढ़लने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा:

मैं आपसे यह नही कर रहा हूँ कि आप सत्ताधारियों के भय से किसी से अपनी निष्ठा का प्रमाण—पत्र मांगे या शिविर अनुयायिओं की तरह जिएं जैसा कि विदेशी प्रभुत्व के समय पहले करते थे। में आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आज भारत में विरासत की जो चमक आप देखें तो उसमें आपके पूर्वजो का योदान है। उनका त्याग न करें। उनके योग्य वारिसों की तरह रहें। यदि आप नही भागना चाहते है तो दुनिया की कोई ताकत आपके भगा नही सकती है। आइए हम शपथ ले कि यह हमारा देश है, हम इसके है और इसकी नियति हमस ब भागीदारी के बगैर अधूरी रहेगी।

संदर्भ

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
ISSN: 3048-7951
Volume-1, Issue-2, August-October 2024

1. इंडिया विनस फ्रीडमः एन ऑटोबायोग्राफीः आख्यान, हुमायू कबीर (संपादित) मुंबई 1959, पृ. 5
2. सुमित सरकार, दि स्वदेशी मूवमेंट इन बंगाल (1903–1908), नई दिल्ली 1973 पृ. 217–43 और 367.
3. फॉरेन एंड पॉलिटिकल, फटियर बी–कॉनफिडेंशिल, ए प्रोसिडिंग, 1914 पृ. 24–30 इसमें सिल्फ लैटर कोंसपायरेसी का एक परिशिष्ट है जिसे वी.एन दत्ता, मौलाना आजाद, नई दिल्ली 1990 पृ. 142 में उद्धरित किया गया।
4. जुडिथ ब्राउन, गाँधीज राईज टु पावर 1915–1922 केंब्रिज 1972 पृ. 205–06.
5. जवाहरलाल नेहरू, आत्मकथा लंदन 1955 पृ.44
6. खुतबत–ए–आजाद उद्धरित वी.एन. दत्ता उपर्युक्त पृ. 129
7. इंडिया विनस फीडम उपर्युक्त पृ.25
8. कलेक्टिउ वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी खंड 32 पृ.511
9. जवाहरलाल नेहरू आत्मकथा लंदन 1955 पृ.136
10. खुतबत–ए–आजाद उपर्युक्त पृ.298